प्रथम सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों ! आज के सत्र की कहानी में हम जानेंगे कि क्यों अर्जुन द्रोणाचार्य जी का प्रिय शिष्य था और कैसे जिज्ञासु मनुष्य ही वास्तव में खोज और आविष्कार कर सकता है ? सनातन संस्कृति में हम जानेंगे हवन का महत्व ।

फिर हम जानेंगे कि भूख, प्यास, खांसी छींक आदि आवेगों को क्यों नहीं रोकना चाहिए ? स्वास्थ्य सुरक्षा में हम जानेंगे अमरूद खाने से क्या लाभ होता है? इसके अलावा गतिविधि, ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न, भजन और अंत मे सुनेंगे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग ।

तो आइए, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते हैं आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

शिखा स्पर्श : सभी बच्चे शिखा के स्थान पर हाथ लगाकर मंत्र उच्चारण करेंगे -

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।

यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ ॐ

(हे विश्व के देव ! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों को दूर करें, और ब्रह्माण्ड में जो भी कल्याणकारक, शुभ गुण, कर्म, स्वभाव, सुख हैं वो हमें प्राप्त हों ।)

अब सभी बच्चे करेंगे “ॐकार” गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM

(2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें ।)

3. आओ सुनें कहानी

जिज्ञासु बनो

यह महाभारत काल की घटना है । गुरु द्रोणाचार्यजी के आश्रम में सभी शिष्य आपस में बातें करते है -

अन्य शिष्य - गुरुदेव, तो केवल अर्जुन को ही प्रेम करते हैं, उनकी नजर में हम तो कुछ हैं ही नहीं।

अन्य शिष्य - हाँ, हम भी राजकुमार है, लेकिन गुरुदेव हमारा तो अपमान कर देते है । हर बार अर्जुन को ही श्रेष्ट बता देते है ।

अन्य शिष्य - इस समय अर्जुन किसी सेवा के लिए आश्रम से बाहर गया हुआ है, अभी अच्छा मौका है, हम गुरुदेव से इस विषय में बात करते हैं ।

अन्य शिष्य - हाँ, हाँ, चलो ।

नरेटर- सभी शिष्यों को अर्जुन के प्रति इर्ष्या होने लग गई थी । वो सब इकट्ठे होकर गुरु द्रोणाचार्यजी के पास आये और कहने लगे -

अन्य शिष्य - गुरुदेव, हम सब को शिकायत है कि आप केवल अर्जुन को ही प्रेम करते हैं, हम भी आपके शिष्य हैं, हम भी राजकुल से है, फिर आप हमसे पक्षपात क्यों करते है?

द्रोणाचार्यजी - पुत्रों, मैं तुमसे पक्षपात नहीं करता हूं, तुम सभी मेरे लिए समान हो । परन्तु अर्जुन में तुम सबसे अधिक जिज्ञासा और एकाग्रता है. जिसके जीवन में जिज्ञासा नहीं है, वह रहस्य को देखते हुए भी अनदेखा कर देता है और जो जिज्ञासु होता है उसकी दृष्टि बड़ी सूक्ष्म होती है, वह हर घटना को बारीकी से देखता है, खोजता है और खोजते-खोजते रहस्य को भी प्राप्त कर लेता है । शिष्य की उन्नति होती है तो गुरु का प्रसन्न होना स्वाभाविक है ।

सभी शिष्य - गुरुदेव, हम यह नहीं मानते । क्या आपकी नजर में केवल अर्जुन ही जिज्ञासु है और हम सभी में से कोई नहीं। ऐसा कैसे हो सकता है? हम भी तो आपसे विद्या सिखने के

लिए ही आयें है । आप हमें अर्जुन की श्रेष्ठता का प्रमाण दीजिये ।

द्रोणाचार्यजी - ठीक है, तुम सबको कुछ ही दिनों में इसका प्रमाण मिल जायेगा ।

सभी शिष्य प्रणाम करके चले जाते है ।

द्रोणाचार्यजी विचार करते है - शिष्यों में आपस में इर्ष्या होना ठीक नहीं है, इनको गलती का अहसास होना चाहिए ।

कुछ दिन बाद द्रोणाचार्यजी ने अपने सभी शिष्यों को बुलाया और कहा - कल प्रातः हम सभी वन भ्रमण के लिए चलेंगे, नदी में स्नान करेंगे और नदी के किनारे शस्त्र विद्या का अभ्यास करेंगे ।

सभी शिष्य प्रसन्न हो गए । अगले दिन प्रातः द्रोणाचार्यजी अपने सभी शिष्यों के साथ भ्रमण करते हुए नदी के किनारे पहुँच गए । द्रोणाचार्यजी एक वटवृक्ष के नीचे बेठ गए और अर्जुन से बोले - बेटा अर्जुन, मैं आश्रम में अपनी धोती भूल आया हूँ, तुम जाकर जरा ले आओ ।

अर्जुन - जी आज्ञा गुरुदेव।

अर्जुन चला गया। अर्जुन के जाने के बाद गुरु द्रोणाचार्यजी ने दूसरे शिष्यों से कहा - धनुष और गदा में तो शक्ति है लेकिन मंत्र में इनसे अनंत गुनी शक्तियाँ होती हैं। मैं तुम्हे मंत्रशक्ति का चमत्कार दिखाता हूं, देखो।

द्रोणाचार्य जी ने धरती पर एक मंत्र लिखा। एक तीर को उस मंत्र से अभिमंत्रित किया और वटवृक्ष की तरफ छोड़ दिया। वह तीर वटवृक्ष के एक-एक पत्ते में छेद करता गया, एक भी पत्ता टुटा नहीं और देखते ही देखते सारे पत्तों में तीर के आकर का छेद हो गया ।

सभी शिष्य आश्चर्यचकित हो कर तालियाँ बजाने लगे और बोले - वाह गुरुदेव, आपका ज्ञान तो अपार है ।

द्रोणाचार्य जी - चलो, अब हम नदी में नहाने चलते हैं।

गुरु द्रोणाचार्यजी और सब शिष्य नहाने चले गये।

थोड़ी देर में अर्जुन उसी वटवृक्ष के पास गुरु की धोती लेकर लौट आया। उसकी दृष्टि पेड़ के पत्तों की ओर गयी। वह विचार करने लगा कि "इस वटवृक्ष के पत्तों में पहले तो छेद नहीं थे । अवश्य जब मैं धोती लाने गया तब गुरुजी ने इन शिष्यों को कोई रहस्य बताया होगा । यदि रहस्य बताया है तो उसका कोई सूत्र भी होगा, कंही शुरुआत भी होगी और कोई चिह्न भी होगा।' अर्जुन ने इधर-उधर देखा तो धरती पर लिखा वह मंत्र दिखा । उसने सोचा, हो ना हो इसी मंत्र से बाण अभिमंत्रित किया होगा.

उसने पूरी एकाग्रता के साथ तिलक लगाने के स्थान (आज्ञाचक्र) पर मंत्र का ध्यान किया और दृढ़ निश्चय किया कि 'मेरा यह मंत्र अवश्य सफल होगा।' फिर तीर उठाया

और मन-ही-मन वह मंत्र जप करके वटवृक्ष की तरफ छोड़ दिया । वटवृक्ष के पत्तों में एक-एक छेद तो पहले से ही था, वह बाण वटवृक्ष के पत्तों में दूसरा छेद करता गया देखते ही देखते सारे पत्तों में बाण के आकर के दो छेद हो गये । अर्जुन को प्रसन्नता हुई कि 'गुरुजी ने उन सबको जो विद्या सिखायी, वह मैंने भी पा ली।'

इतने में द्रोणाचार्य जी और सभी शिष्य नहाकर आ गए. सबने वृक्ष के पत्तों में दूसरा छेद देखा। सब चकित हो गये।

द्रोणाचार्य जी ने पूछाः "ये पत्तों में दूसरा छेद कैसे हुआ?

शिष्य - पता नहीं गुरुदेव ! हम तो आपके साथ नहाने गए हुए थे ।

द्रोणाचार्य ने अर्जुन से पूछाः "क्या तुम जानते हो?

अर्जुन थोड़ा डर गया किंतु झूठ नहीं बोला। उसने कहाः "गुरुदेव, यह मैंने किया है, मुझे लगा आपने इन सबको तो यह विद्या सिखा ही दी है, तो फिर मैं अकेला आपसे पूछकर आपका समय नष्ट न करूँ, इतना खुद ही सीख लूँ। गुरु जी! आपकी आज्ञा के बिना आपके मंत्र का प्रयोग किया इसलिए क्षमा कर कीजिये।"

द्रोणाचार्यः "नहीं अर्जुन! तुममें जिज्ञासा है, सीखने की तड़प है, संयम और एकाग्रता है, मंत्र पर तुम्हें विश्वास है। मंत्रशक्ति का

प्रभाव देखकर ये सब तो केवल वाह-वाही करने लग गए और नहाने चले गये। इनमें से किसी ने भी यह विद्या सिखने और दूसरा छेद करने का सोचा ही नहीं । तुमने हिम्मत की, प्रयत्न किया और सफल भी हुए।

फिर द्रोणाचार्य जी ने सभी शिष्यों की ओर देखा और कहा - देखा तुम सब ने, तुम्हारे जीवन में जिज्ञासा नहीं है, इसलिए तुम सबने वह रहस्य देखकर भी अनदेखा कर दिया । जबकि अर्जुन ने बिना देखे रहस्य खोज लिया. क्या तुम्हे इसका प्रमाण मिल गया कि क्यों अर्जुन मेरा प्रिय सत्पात्र शिष्य है?

सभी शिष्य नतमस्तक हो गए । उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया. अर्जुन अपने इसी गुण के कारण विश्व का महान धुनर्धर बना.

तो देखा बच्चों, जिसके जीवन में जिज्ञासा है, सीखने की तड़प है और अर्जुन जैसा संयम और पुरुषार्थ हो तो वह बड़े रहस्य भी खोज लेगा । वह जिस क्षेत्र में कदम बढ़ाए, सफल हो सकता है। विश्व की समस्त खोजें और आविष्कार जिज्ञासा के कारण ही संभव होते है।

पूज्य बापूजी कहते हैं - भगवान को पाने की जिज्ञासा तो परम ऊँची चीज है। जब यह जिज्ञासा होती है तब मन में प्रश्न उठते

है - भगवान क्या है ? यह सृष्टि क्या है ? हम क्या हैं ? आखिर यह जिज्ञासा साधक को शाश्वत सत्य तक ले जाती है।

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - सदगुरुदेव भगवान जी की जय ।

4. भजन / पाठ

आज हम एक भजन गायेंगे -

बापू हमारे आये हैं...

https://youtu.be/VnQ7L2oS5EY

5. ज्ञान का चुटकुला

पप्पू मोबाइल कंपनी में नौकरी के लिए इंटरव्यू देने गया।

मेंनेजर - बताओ सबसे अच्छा नेटवर्क कौन सा है?

पप्पू - जी कार्टून नेटवर्क!

मेंनेजर - जी, फिर आप कार्टून कंपनी में इंटरव्यू दें।

सीख - युक्ति युक्त प्रश्न का उत्तर देना चाहिए ।

6. संस्कृति सुवास :-

हवन-यज्ञ का महत्त्व (गतांक से आगे)

पूज्य बापू जी बताते हैं- "देशी गाय के गोबर के कंडे पर अगर एक चम्मच घी की बूँदें डालकर धूप करते हैं तो एक टन शक्तिशाली वायु बनती है । इससे मनुष्य तो क्या, कीट-पतंग और पशु-पक्षियों को भी फायदा होता है ।

वर्ष 2006 में सूरत में भीषण बाढ़ आयी थी, जिससे वहाँ कई गम्भीर बीमारियाँ फैल रही थीं । तब पूज्य बापू जी ने गूगल, देशी घी आदि हवनीय औषधियों के पैकेट बनवाये तथा अपने साधक-भक्तों को घर-घर जाकर धूप करने को कहा। साधक-समुदाय ने वैसा ही किया, जिससे सूरत में महामारियाँ व्यापक रूप नहीं ले पायीं । इसी प्रकार अभी हाल ही में कोरोना महामारी के समय सभी आश्रम और समितियां ने अपने-अपने आसपास हवन धूप निरंतर चालू रखा जिससे उस क्षेत्र में कोरोना का प्रभाव इतना नहीं पढ़ पाया ।

हवन करते समय "इदं न मम:" का उच्चारण करते हुए आहुति देते हैं तो मन में त्याग की भावना होती है और यह कामना भी होती है - हे परमात्मा, जिस तरह इस हवनकुण्ड की लौ से और इससे निकलने वाले सुगन्ध से पूरा वातावरण शुद्ध पवित्र और विकासवान हो रहा है, उसी तरह हमारा जीवन भी विकारों पर विजय प्राप्त करते हुए निरन्तर उन्नति की तरफ अग्रसर हो । यज्ञ से शुद्ध हुई जलवायु से उत्पन्न औषधि, अन्न और वनस्पतियां आदि भी शुद्ध एवं निर्दोष होते हैं। आकाश मंडल निर्मल और प्रदूषणमुक्त हो जाता है। ये ही पदार्थ आकाश मंडल में पहुंच कर मेघ बनकर वर्षा में सहायक होते हैं । वर्षा से अन्न और अन्न से प्रजा की पुष्टि होती है । इस प्रकार जो हवन यज्ञ करता है वह मानो प्रजा का पालन ही करता है।

श्रीमद् भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते है -

सहयज्ञाः प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्तिवष्टकामधुक्।
देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।

प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजाओं को रचकर उनसे कहा कि तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित भोग प्रदान करने वाला हो। तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा देवताओं को उन्नत करो और वे देवता तुम लोगों को उन्नत करें। इस प्रकार निःस्वार्थभाव से एक-दूसरे को उन्नत करते हुए तुम लोग परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे ।

7. स्वास्थ्य सुरक्षा

अमरूद के लाभ

- अमरूद शक्तिदायक, वीर्यवर्धक तथा वायु व पित्त शामक है, यह बुद्धिवर्धक है ।
- बौद्धिक सोच-विचार व कम याददाश्त वालों के लिये विशेष हितकारी है ।
- यह थकान को दूर करता है।
- प्यास व जलन को शांत करता है ।
- गर्मी से उत्पन्न रोगों में हितकारी है।

- अमरूद में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, रेशे, विटामिन 'ए, 'ई, 'के' , 'बी-6', थायमीन, राइबोफ्लेविन, नायसिन, कैल्शियम, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, पोटैशियम, लौह, जस्ता, ताँबा आदि पोषक तत्त्वों के साथ विटामिन 'सी' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जिससे इसके सेवन से अनेक बीमारियाँ दूर होती हैं ।

8. साखी :-

उद्यमं साहसं धैर्यं बुद्धि शक्ति पराक्रम ।
षडेते यात्र वर्तन्ते तत्र देव सहायकृत ।।

जिसके जीवन में उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम जैसे सद्गुण होते है उसे भगवान पद पद पर (हंमेशा) सहायता करते है ।

9. गतिविधि :-

मातृ देवो भव:, पितृ देवो भव:

बच्चों, इस हप्ते की गतिविधि में आपको इसी महीने में आनेवाले महापर्व (१४ फरवरी) 'मातृ पितृ पूजन दिवस' की तैयारी करनी है । आप अपने माता पिता का पूजन कैसे करेंगे ? उस पूजन के लिए आपको कौन कौन सी सामग्री चाहिए वो आपको इकट्ठा करना है तथा आप अपने माता पिता के लिए क्या खास करोगे - ये भी आपको सोचना है ।

१४ फरवरी को अपने माता पिता का पूजन करके फोटो या वीडियो अपने बाल संस्कार शिक्षक को भेजना है ।

10. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है । प्रश्न है,-

"श्रीमदभगवद्गीता गीता के अनुसार कौन सा सुख आरम्भकाल में विष के तुल्य प्रतीत होता है, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य है?" विकल्प है -

a) सात्त्विक सुख

b) राजसिक सुख

c) तामसिक सुख

d) काल्पनिक सुख

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम सभी श्री आशारामायणजी की पंक्तियां दोहराएंगे । https://youtu.be/bl57Gh3T4ps (कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे-

तनावमुक्त जीवन जीने के लिये ८ उपाय

https://youtu.be/oQ6FxayqzBg

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- द्रोणाचार्यजी अर्जुन को ही अधिक प्रेम क्यों करते थे?
- अर्जुन ने किस प्रकार बिना सिखाये ही विद्या पा ली।?
- द्रोणाचार्यजी ने किस प्रकार प्रमाणित किया कि अन्य शिष्यों में सिखने की जिज्ञासा नहीं है.
- कौनसी जिज्ञासा तो परम ऊँची चीज़ है?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- अमरूद में कौनसे पोषक तत्त्व होते है?
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति

<u>आरती</u> - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

नारायण नारायण नारायण नारायण।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ!!!

<u>दीपज्योति एवं आरती</u> -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है -सात्त्विक सुख ।

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं 'जो आरम्भकाल में विष के तुल्य प्रतीत होता है, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य है वह परमात्म विषयक बुद्धि के प्रसाद से उत्पन्न होने वाला सुख सात्त्विक कहा गया है। (गीताः 18.37)

****

दूसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों, 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' इसी माह में आ रहा है । तो आज के सत्र की कहानी में हम जानेंगे कि किस प्रकार से एक पितृभक्त पुत्र के सच्चे प्रेम व उसकी समझदारी के कारण पूरे प्रांत में फैली कुप्रथा सदा के लिए समाप्त हो गयी । संस्कृति सुवाष में हम जानेंगे कि बड़े बुजुर्गो का चरण स्पर्श करने और आदर करने का क्या वैज्ञानिक महत्व है? फिर हम जानेंगे कि वेलेन्टाइन डे मनाने के क्या भयंकर दुष्परिणाम होते है और क्यों हमारे पूज्य गुरुदेव ने 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' की शुरुआत की थी ।

इसके अलावा मजेदार गतिविधि, ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न, भजन और अंत में सुनेंगे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग । तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क में रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती फुर्ती मे मदद मिलेगी।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे । त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ सुनें कहानी :-

पितृभक्त पुत्र

यह प्राचीनकाल में तिब्बत प्रदेश की घटना है । वहाँ के मुर्ख राजा ने नियम लागू किया हुआ था कि 'जब आदमी बूढ़ा हो जाय और कामकाज न कर सके तो उसे पहाड़ या जंगल में ले जाकर छोड़ दिया जाय।' राजा के सख्त नियम के अनुसार वहां के लोग अपने बूढ़े माता-पिता को जंगल में छोड़ कर आ जाते थे । उस राज्य में वानचुंग नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति अपने पुत्र सानचुंग के साथ रहते थे । दोनों पिता-पुत्र में बहुत प्रेम था । लेकिन समय पाकर पिता वृद्ध हो गए ।

एक दिन उनके घर पर राज्य के सैनिक आ गए और कहने लगे – सानचुंग, तुम्हारे पिता वानचुंग वृद्ध हो गए हैं । राजकीय नियमो के अनुसार तुम उन्हें जंगल में छोड़ कर आ जाओ, अन्यथा राजाज्ञा का पालन ना करने का दंड मिलेगा और सैनिक जबरन इन्हें जंगल में छोड़ कर आ जायेंगे ।

पुत्र सानचुंग का मन न होते हुए भी नियमानुसार मजबूरन पिता को अपनी पीठ पर लादा और जंगल की तरफ निकल पड़ा। मार्ग में पिता पीठ पर बैठे-बैठे ही रास्ते के पेड़ों की फूल-पत्तियाँ तोड़-तोड़कर जमीन पर गिराता गया। जंगल में किसी नदी किनारे पहुँच कर पिता को उतार दिया। तब पिता बोले - पुत्र, तुम लौटते समय मार्ग में कहीं भटक न जाओ,

इसलिए मैं रास्ते के पेड़ों की फूल-पत्तियाँ तोड़-तोड़कर जमीन पर गिराता गया ताकि तुम सकुशल घर लौट सको। पिता का प्यार देखकर सानचुंग की आँखों में आँसू आ गये, उसने पिता को गले लगाया, पैर छुए और घर वापस आ गया। वह पिता की याद में दुःखी रहने लगा।

एक दिन मूर्ख राजा ने घोषणा करवायी कि 'जो व्यक्ति राख की रस्सी बनाकर लायेगा उसे पुरस्कार दिया जायेगा।'

सानचुंग ने सोचा, - मेरे पिता बुद्धिमान और अनुभवी है. क्यों न जंगल में जाकर उन्हीं से इसका उत्तर पूछूं?

वह जंगल में पिता के पास गया और पिता को यह बात बतायी। पिता ने यह सोचकर कहा : ''बेटा ! यह कोई कठिन काम नहीं है। एक खूब कसी हुई रस्सी बनाओ और उसे एक तख्ते पर रखकर जला दो तो राख की रस्सी तैयार हो जायेगी ।''

सानचुंग ने ऐसा ही किया । रस्सी देख राजा उसकी बुद्धिमाता देख कर बड़ा खुश हुआ और बहुत सारा धन उसे दिया ।

कुछ समय बाद दिन मुर्ख राजा ने घोषणा करवायी कि 'जो व्यक्ति ऐसा ढोल बनायेगा जो बिना बजाये अपने आप बजने लगे उसे पुरस्कार दिया जायेगा।'

सानचुंग घोषणा सुनकर फिर से अपने पिता का पास गया और सारी बात बतायी। पिता ने इसका उपाय बता दिया।

सानचुंग ने वापस आकर एक ढोल लिया और उसके अंदर मधुमक्खियों सहित एक छत्ता डाल दिया और ऊपर से चमड़ा मढ़ दिया । फिर उसे राजा के सामने ले जाकर थोड़ा हिला दिया। ढोल के हिलने-डुलने से मधुमक्खियाँ उड़ीं और ढोल के चमड़े से जा टकरायीं, जिससे ढोल अपने आप बजने लगा ! यह करामात देख राजा खुश हो गया और इनाम देकर उससे पूछा : ''तुमने यह कैसे किया?''

सानचुंग सारी बात सही-सही बताते हुए अंत में बोला : ''महाराज, बुजुर्ग लोग वास्तव में बुद्धिमान व अनुभवी होते हैं। उनकी सीख जीवन में बहुत काम आती है। राजा की आज्ञा से मैंने अपने पिता को जंगल में छोड़ दिया पर मैं उनसे बहुत प्यार करता हूँ, रोज उनसे मिलने जाता हूं, उनके अनुभव बुद्धिमता के कारण मेने 2 बार राजकीय पुरस्कार जीता और काम काज में भी सफलता प्राप्त की।'' यह कहते-कहते वह रो पड़ा।

वृद्ध वानचुंग की समझदारी व तरकीब से राजा बहुत प्रभावित हुआ और बोला : ''मुझे आज पता चला कि बुजुर्ग लोग वास्तव में बुद्धिमान व अनुभवी होते हैं । आज से बूढ़े लोगों को पहाड़ पर भेजने की प्रथा हमेशा के लिए खत्म की जाती है। अब सभी लोग वृद्ध माता-पिता की सेवा करेंगे, उन्हें अपने साथ रखेंगे।'' इस तरह से एक पितृभक्त पुत्र के सच्चे प्रेम व उसकी समझदारी के कारण पूरे प्रांत में फैली कुप्रथा सदा के लिए समाप्त हो गयी ।

पूज्य बापूजी कहते है – गुरु और माता-पिता बच्चों के सच्चे हितैषी होते हैं । ये तीनों जीवन में आनेवाली कठिनाइयों व समस्याओं का सहज में ही हल निकाल देते हैं । जो उनका आदर-सत्कार तथा सेवा-पूजा करता है, वह उनकी प्रसन्नता पा लेता है और जीवन-संग्राम में सफल हो जाता है । पूज्य बापू जी ने भी बाल्यकाल से ही अपने माता-पिता की सेवा की और उनसे ये आशीर्वाद प्राप्त किये।

पुत्र तुम्हारा जगत, में सदा रहेगा नाम।

लोगों के तुमसे सदा, पूरण होंगे काम।।

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे श्री सदगुरुदेव भगवान की जय....

4. ज्ञान का चुटकुला :

शिक्षक - क्या तुम अपनी मां का कहना मानते हो?

चिंटू - सर, मैं अपनी मां का 4 गुना कहना मानता हूं।

"4 गुना, वह कैसे" ?

"मां केवल एक मिठाई खाने को कहती है, मैं चार मिठाई खा लेता हूं।"

सीख : अधिक स्वाद लोलुप नहीं होना चाहिए, ज्यादा मीठा खाना नुकसानकारक होता है ।

5. संस्कृति सुवास

बड़ों का आदर करने का वैज्ञानिक महत्व

अमेरिका में एशियन मूल के विद्यार्थी क्यों पढ़ाई में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करते हैं, इस विषय पर शोध करते हुए अमेरिका में डॉक्टरों ने यह पाया कि वे अपने

बड़ों का आदर करते हैं तथा उज्जवल भविष्य निर्माण के लिए गंभीरता से श्रेष्ठ परिणाम पाने के लिए अध्ययन करते हैं।

हमारे शरीर के चारों तरफ एक आभामंडल (Aura) होता है। यह आभा मंडल हमारे ऊर्जा, मानसिक शक्ति, इच्छा-शक्ति (Will power) और विचारो के प्रकार पर निर्भर करता है। हमारे विचारों और व्यव्हार के बदलने से इनमे भी परिवर्तन होता रहता है। किसी आध्यात्मिक सोच वाले व्यक्ति का आभा-मंडल का प्रभाव किसी पापी, अहंकारी व्यक्ति के आभामंडल से बिलकुल विपरीत होता है।

जब हम बड़े बुजुर्गो का चरण स्पर्श करते हैं, तो उनके ह्रदय से प्रेम, आशीर्वाद और संवेदना, सहानुभूति की भावनाएं निकलती है जो उनकी आभामंडल (Aura) में परिवर्तन लाती है। पैर छूने से हम उनके आभामंडल से अपने आभामंडल में इन ऊर्जाओं को ग्रहण करते है। यह उर्जा हमारे मन-मष्तिष्क पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती

है। यह हमारे आभामंडल (Aura) को अधिक ऊर्जावान बनाती है।

भारतीय ज्योतिष में भी बताया गया है कि अपने से उम्र में बड़े-बुजुर्गों का चरण छूने से कई प्रतिकूल ग्रह-नक्षत्र अनुकूल हो जाते हैं।

मनु महाराज ने कहा कि नित्य वृद्ध जनों को प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से मनुष्य की आयु, बुद्धि, यश और बल - यह चारों बढ़ते हैं| आप - हम सब भारतवासी हैं। दूरदृष्टि के धनी ऋषि-मुनियों की संतान हैं। माता पिता का पूजन करने से काम राम में बदलेगा, अहंकार प्रेम में बदलेगा, माता-पिता के आशीर्वाद से बच्चों का मंगल होगा। “

6. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की।

आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है,- “ महाशिवरात्रि किस माह में आती है ?” विकल्प है -

A) मार्गशीर्ष

B) पौष

C) माघ

D) फाल्गुन

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

7. क्या करें, क्या नहीं ?

14 फरवरी को पश्चिमी देशों में युवक युवतियाँ एक दूसरे को ग्रीटिंग कार्डस, फूल आदि देकर वेलेन्टाइन डे मनाते हैं। इससे जो समस्याएँ पैदा हुईं, उनको मिटाने के लिए वहाँ की सरकारों को स्कूलों में केवल संयम अभियानों पर करोड़ों डालर खर्च करने पर भी सफलता नहीं मिलती। अब यह कुप्रथा हमारे भारत में भी आ रही है। हमें इसका बहिष्कार करना चाहिए। इसी कारण पूज्य बापूजी ने एक नयी पहल - 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' शुरू करवाया।

पूज्य बापूजी कहते हैं -

प्रेम दिवस जरूर मनायें लेकिन प्रेमदिवस में संयम और सच्चा विकास लाना चाहिए। इस दिन बच्चे-बच्चियाँ माता-पिता का पूजन करें और उनके सिर पर पुष्प रखें, प्रणाम करें तथा माता-पिता अपनी संतानों को प्रेम करें। संतान अपने माता-पिता के गले लगे। इससे वास्तविक प्रेम का विकास होगा। बेटे-बेटियाँ माता-पिता में ईश्वरीय अंश देखें और माता-पिता बच्चों में ईश्वरीय अंश देखें।

प्रेम-दिवस (वेलेन्टाइन डे) के नाम पर विनाशकारी कामविकार का विकास हो रहा है, जो आगे चलकर चिड़चिड़ापन, डिप्रेशन, खोखलापन, जल्दी बुढ़ापा और मौत लाने वाला साबित होगा। अतः भारतवासी इस अंधपरंपरा से सावधान होना चाहिए !

कलियुग में तप, उपवास, व्रत, धारणा, ध्यान, समाधि तो कठिन है, लेकिन चलते फिरते जागते देव सर्वतीर्थमयी माता, सर्वदेवमय पिता का आदर-सत्कार करना तो सरल है । उनके बुढ़ापे में उनसे उद्दण्ड व्यवहार न करना, उनको नर्सिंग होम में, वृद्धाश्रम में, अनाथाश्रम में मत छोड़ना, उनसे मुँह मत मोड़ना और सब मिलेगा लेकिन माता-पिता नहीं मिलेंगे

। माता-पिता तो जागृत देवता हैं । कितने दुःख सहकर माता ने हमें जन्म दिया, पाला-पोसा, बड़ा किया । पिता ने कितनी कठिनाइयों से हमारा भरण-पोषण किया । जो माता-पिता और गुरुओं का आदर करते हैं वे स्वयं भी आदरणीय हो जाते हैं। भगवान तुम्हें ऐसी सद्बुद्धि दें । ॐ.... ॐ.... ॐ....

8. श्लोक :-

"अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।।"

इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति बड़ों का सम्मान करता है और उनकी सेवा करता है, उसकी आयु (जीवन), विद्या (ज्ञान), यश (कीर्ति) और बल (शक्ति) - ये चार गुण स्वयं ही बढ़ते हैं।

9) भजन :-

भजन - अब सभी बच्चे गाएंगे प्यारा सा भजन - मात पिता गुरु प्रभु चरणों में...

https://youtu.be/hb3FvBAyAbg

10) गतिविधि :-

अब सभी बच्चे खड़े होकर एक एक करके यह बताएंगे की,

- बडे-बुजुर्गों और माता पिता को प्रणाम करने से क्या लाभ होता है ?
- पश्चिमी देशों के अनुसार (वेलेन्टाइन डे) मनाने से क्या हानियाँ होती है ?

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bl57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे -

जानिए क्या होते हैं माँ-बाप...?

https://youtu.be/gtIYgqv0KSA

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- आज के सत्संग से हमें क्या सीख मिलती है?
- माता पिता का सम्मान एवं सेवा करने से कौन-सी चार चीजें बढती है ?
- पूज्य बापूजी ने मातृ-पितृ पूजन दिवस कि पहल क्यों शुरू की ?
- भारतीय ज्योतिष में भी बताया गया है कि अपने से उम्र में बड़े-बुजुर्गों का चरण छूने से कई प्रतिकूल ग्रह-नक्षत्र अनुकूल हो जाते हैं । (सही/गलत)
- कौन स्वयं आदरणीय हो जाता है ?

- पुत्र तुम्हारा जगत, में सदा रहेगा नाम। लोगों के तुमसे सदा, पूरण होंगे काम ।। - ये आशीर्वाद किसने किस से प्राप्त किये ?

14. पूर्णाहूति :-

दीपज्योति एवं आरती

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,

तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है ।

D) महाशिवरात्रि फागुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाई जाती है

****